1971F On the 90th Anniversary of Jugar Kishore Mukhtar

Mukhtar Saheb ke Vishay main Ek Khula Patra (In Jain Mitra, 1971)

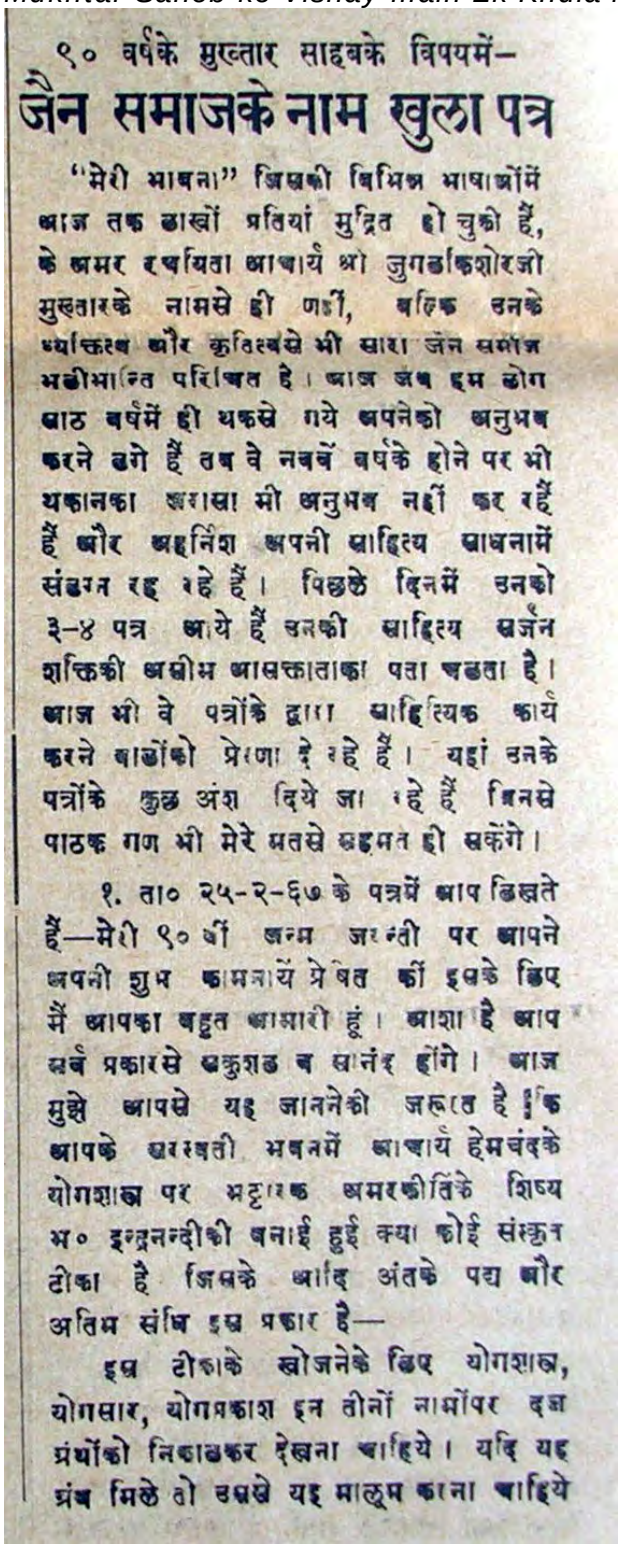

९० वर्षके मुख्तार साहबके विषयमें—

जैन समाजके नाम खुला पत्र

"मेरी भावना" जिसकी विभिन्न भाषाओंमें आज तक लाखों प्रतियां मुद्रित हो चुकी हैं, के अमर रचयिता आचार्य श्री जुगलकिशोरजी मुख्तारके नामसे ही नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्वसे भी सारा जैन समाज भलीभान्ति परिचित है। आज जब हम लोग आठ वर्षमें ही थकसे गये अपनेको अनुभव करने लगे हैं तब वे नब्बें वर्षके होने पर भी थकानका जरासा भी अनुभव नहीं कर रहें हैं और अहर्निश अपनी साहित्य साधनामें संलग्न रह रहे हैं। पिछले दिनमें उनको ३-४ पत्र आये हैं उनकी साहित्य सर्जन शक्तिकी असीम आसक्तताका पता चलता है। आज भी वे पत्रोंके द्वारा साहित्यिक कार्य करने वालोंको प्रेरणा दे रहे हैं। यहां उनके पत्रोंके कुछ अंश दिये जा रहे हैं जिनसे पाठक गण भी मेरे मतसे सहमत हो सकेंगे।

१. ता० २५-२-६७ के पत्रमें आप लिखते हैं—मेरी ९० वीं जन्म जयन्ती पर आपने अपनी शुभ कामनायें प्रेषित कीं इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। आशा है आप सर्व प्रकारसे सकुशल व सानंद होंगे। आज मुझे आपसे यह जाननेकी जरूरत है कि आपके सरस्वती भवनमें आचार्य हेमचंद्रके योगशास्त्र पर भट्टारक अमरकीर्तिके शिष्य भ० इन्द्रनन्दीकी बनाई हुई क्या कोई संस्कृत टीका है जिसके आदि अंतके पद्य और अंतिम संधि इस प्रकार है—

इस टीकाके खोजनेके लिए योगशास्त्र, योगसार, योगप्रकाश इन तीनों नामोंपर उन ग्रंथोंको निकालकर देखना चाहिये। यदि यह ग्रंथ मिले तो उससे यह मालूम करना चाहिये

कि ग्रंथमें वस्तुतः १३ अधिकार हैं या ६। और लिपि काल भी कोई दिया है क्या। हो तो उसे भी नोट करें। यह एक नया ग्रंथ हाल हीमें उपलब्ध हुआ है। मैं इस ग्रंथपर कुछ समयसे कार्य कर रहा हूं और लेख भी लिखना प्रारम्भ कर दिया है अतः अपने यहांके भंडारसे उक्त जानकारी मुझे शीघ्र ही देनेकी कृपा कीजिये।

हां एक बात और भी देखिये कि क्या अध्यात्म तरंगिणि नामपर आ० अमितगति वीतरागाका योगसार प्राभृत भी चढ़ा हुआ है यदि ऐसा है तो उसपर लेखन लिपिकाल दिया है क्या?

२. दिनांक ३०-३-६७ के पत्रमें आप लिखते हैं—ता० २७ मार्चका पत्र मिला। आपने जो सूचना की उसके लिये आभारी हूं। श्री अमितगति कृत योगसार ग्रन्थको तो मैं पहले ही आपके यहांसे मंगा चुका हूं और तुलनामें उसका उपयोग कर चुका हूं। इस योगसार प्राभृतपर जो महत्वका भाष्य लिखा गया है वह अब जल्द ही प्रकाशित किये जानेको है। आपने मेरे विषयमें जो अपना भाव व्यक्त किया है उसके लिए आभारी हूं।

कृपया यह सूचित कीजिए कि क्या आपके सरस्वती भवनमें विजय वर्णी कृत मंत्रसार समुच्चय अथवा ब्रह्म विद्याविधि नामका कोई संस्कृत ग्रन्थ है? यदि है तो उसमें कितने अधिकार हैं, पूर्ण है या अपूर्ण और उसके आदि अंतका कुछ भाग जानकारीके लिए सूचित कीजिए। इसी पत्रके अंतमें आप लिखते हैं—कुछ दिनोंसे मेरा स्वास्थ्य गड़बड़में चल रहा है और कमजोरी अधिक है परन्तु अब कुछ पहलेसे सुधारपर है। आशा है कि कुछ दिनोंमें ठीक हो जावेगा।

अन्तमें आप मेरे लिए लिखते हैं—आजकल आपका क्या कुछ अनुसंधान कार्य चल रहा है लिखें। एक पुराने सरस्वती भवनमें बैठे हुए तो आपको नयेर अनुसंधान करके प्रकाशमें लाना चाहिये।

उक्त दोनों पत्रोंसे जहां मुख्तार साहबकी स्वयं जागरूकता और तत्परतापूर्वक अपनी अनुसंधान प्रवृत्तियोंका पता चलता है वहीं वे दूसरोंके लिये भी किस प्रकार अनुसंधानकी प्रेरणा देते हैं यह भी दृष्टव्य है।

जिस व्यक्तिने अपने जीवनका बहुभाग समाजको सम्बोधित कर उसके सुधारमें लगाया और अपनी समाज सुधारकी असंख्य योजनाओंको कार्यरूपसे परिणत करनेके लिए स्वयं अपने ही उपार्जित द्रव्यसे अपनी जन्मभूमि सरसावामें वीरसेवा मन्दिरकी स्थापना कर अनेक वर्षोंतक सुचारु संचालन किया तथा उन्हीं योजनाओंको और भी आगे बढ़ानेकी भावनासे आपके अनन्य भक्त और अपनेको उनका पुत्र और शिष्य माननेवाले स्वनामधन्य स्व० बाबू छोटेलालजी कलकत्ताने भारतकी राजधानी दिल्लीमें वीरसेवा मन्दिरका एक विशाल भवन भी निर्माण करा दिया और आशा की कि अब यहांपर मुख्तार सा. निराकुल बैठकर अपने स्वप्नोंका साक्षात्कार करेंगे। मगर यह भाग्यकी विडम्बना ही समझिये कि कुछ अवसरवादियोंके चक्रसे उनके वे सारे दिवा-स्वप्न रात्रि स्वप्नवत् रह गये।

मुख्तार सा० ने अपनी बहुमुखी प्रतिभाका उपयोग सर्व प्रथम समाज सुधारके कार्यमें लगाया। तदनंतर दि० जैनाचार्योंके इतिहास अन्वेषणमें, जैन ग्रंथोंकी परीक्षा एवं समीक्षा करनेमें लगाया। तत्पश्चात् अनेक सर्जनात्मक प्रवृत्तियोंको प्रगति देनेके लिए वीर सेवा मंदिरकी स्थापना की। अनेकांत जैसे ऐतिहासिक मासिक पत्रिकाका संचालन संपादन किया और स्वामी समंतभद्रके अतिगहन दार्शनिक ग्रन्थोंका अवगाहन करके उनका सुन्दर संपादन किया और उनपर विस्तृत विवेचन वाली प्रस्तावना लिखकर तथा स्वामी समंतभद्रका इतिहास लिखकर भगवान महावीरके शासनको सर्व प्रथम सर्वोदय तीर्थ प्रकट करने वाला बताया। आज भी वे नये नये ग्रन्थोंके अनवेशनण और उनपर विस्तृत हिन्दी भाष्य लिखनेमें संलग्न हैं।

उन्हें अपने आयुष्यके भविष्य जाननेकी कितनी उत्सुकता रहा है कि आजसे ३०-३५ वर्ष पूर्व ही कालज्ञान विषयक ग्रंथोंकी छानबीन करके अपनी आयुको जाननेका प्रयत्न किया। जन्मकुण्डली सामुद्रिक हस्त मस्तिष्क रेखाओं आदिके द्वारा उसका निर्धारण किया और तदनुसार आपने अपनी वीरसेवा मन्दिर संबंधी योजनाओंको मूर्तिमंत होता न देखकर उससे विरक्त हो एकांतमें बैठकर आप अपनी व्यक्तिगत योजनाओंको साकार करने एवं अपने भावी जीवनके सुन्दर निर्माणमें सतत् सावधान रह रहे हैं।

आपकी इन सब सेवाओंको दृष्टिमें रखकर आपके अनन्य भक्त स्व० बाबू छोटेलालजीने आपको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करनेकी एक योजना आजसे १० वर्ष पूर्व बनायी थी पर वह वोंही रह गयी। तत्पश्चात् वीरसेवा मन्दिर ट्रस्टकी ओरसे एक योजना बनी, पर पता नहीं वह क्यों खटाईमें पड़ गयी। इस बीच समाजने श्री बाबू छोटेलालजीको अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करनेकी योजना बनायी, सामग्री भी संकलित हो गयी और ज्यों ही उसके प्रेसमें देनेका अवसर आया कि बाबू साहब स्वर्गीय हो गये।

हमारा समाज जीवित व्यक्तियोंमें तो दोषान्वेशण ही करता रहता है और मरने पर उसके गुणगान करते नहीं थकता। इसका ताजा प्रमाण श्री पं० गोपालदासजी बरैया हैं जिनके जीवित रहते हुए स्थितिपालकोंने उनका डटकर विरोध किया और आज उनकी शताब्दि मनाकर और स्मृतिग्रन्थ प्रकाशित कर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है।

मैं समाजको सचेत कर देना चाहता हूं कि मुख्तार सा० का जितनी जल्दी हो सके सार्वजनिक सम्मान किया जाय और उनके अगले मगसिर मासमें नव वर्ष प्रवेशके अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंटकर उनकी सेवाओंके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाय। इस अवसर पर मैं यह निसंकोच भविष्यवाणी कर रहा हूं कि—

"अब आगे मुख्तार सा० का जीवन स्वल्प ही शेष रह गया है। जन्म कुण्डली आदिके आधार पर ज्योतिषियोंने उनके ९१ वें वर्षमें साधारणसी २-१ दिनकी बीमारीमें ही उनके स्वर्गारोहणकी तिथि प्रकट की है। जिससे मुख्तार सा० स्वयं परिचित एवं जागरूक हैं। अतः समाजका कर्तव्य है कि उनके ९१ वें वर्षमें प्रवेश करते ही उनका सार्वजनिक अभिनन्दन सारी समाजकी ओरसे कियाजाय"

अभी तक जो उनके अभिनन्दनकी चर्चा चली वह किसी एक संस्थासे ही संबद्ध थीं, किन्तु मुख्तार सा० की सेवाएं समग्र जैन समाजके लिए रही हैं, आज भी चल रही हैं और भविष्यमें भी समाज उनकी सेवाओं एवं साहित्यिक साधनाओंसे लाभान्वित होगा। इसलिए उनका अभिनन्दन समस्त दिगम्बर जैन समाजकी ओरसे ही होना चाहिये।

श्री साहू शांतिप्रसादजीसे निवेदन

इस महान कार्यको स्वल्प समयमें सुचारु रूपसे सम्पन्न करनेके लिए मैं श्रीमान् साहू शांतिप्रसादजीको आगे आनेके लिए इस खुले पत्र द्वारा उनसे निवेदन करता हूं। उन्होंने मुख्तार सा० की सेवाओंसे प्रेरित होकर आजतक हजारों रुपये वीरसेवा मंदिरको दिये तथा दिल्ली भवनके निर्माणमें एक मंजिलका अर्थभार वहन किया है। और तभी उसके शिलान्याससे अवसर पर स्वयं साहूजीने अपने पितामहके सानिध्यमें मेरी भावनाका पाठ करने और मुख्तारसाहब द्वारा नजीबाबाद जाकर उनकी परीक्षा आदि लेनेके संस्मरण सुनाते हुए स्वयंको उनका शिष्यत्व बताया था।

श्री पं० कैलाशचंद्रजी शास्त्रीने मुख्तारसा० द्वारा प्रारम्भ किये गये आचार्योंके ऐतिहासिक शोध कार्योंको आगे बढ़ानेका कार्यभार सम्भालकर अनजाने ही उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया है।

अतः मैं उक्त महानुभावोंसे निवेदन करूंगा

कि अर्थभारको सहर्ष वहन करें और ग्रंथके संपादन भारको बं०जी वहन करें। मुख्तार साहबके अभिनंदन कार्यको शीघ्र संपन्न करनेके लिए कृत संकल्प होकर तत्काल आवश्यक कार्योंको प्रारंभ कर देनेकी व्यवस्था करें।

मैं समस्त जैन समाजसे निवेदन करूंगा कि वह इस पत्रको पढ़ते ही तुरन्त सहर्षको पत्रों द्वारा मेरे प्रस्तावका समर्थन करते हुए मुख्तार सा०की आगामी वर्षगांठके समय अभिनंदन ग्रन्थ भेंट करनेके लिए प्रेरित करें और पं० कैलाशचंद्रजीको आगे आकर इस पुण्य कार्यको सुचारू संपादन करनेके लिए आग्रह करे। अन्यथा समय बीत जाने पर फिर पछतावा ही हाथ रह जावेगा।

मुख्तार सा० के शत वर्ष जीवी होनेकी कामना करते हुए भी जो स्थिति मेरे सामने आज १० वर्षसे बन रही है उस कटु सत्यको लिखनेके लिए मुझे विवश होकर यह खुला पत्र प्रकाशित करना पड़ रहा है। इसके लिए मुख्तार साहबसे क्षमा याचना करते हुए सारे समाजसे उक्त कार्यमें हाथ बटानेके लिए मेरा यह नम्र निवेदन है।

प्रेषक:—पं. हीरालाल सिद्धांतशास्त्री,
ऐ० प० सरस्वति भवन-ब्यावर।

श्रीमान आचार्य जुगलकिशोरजी मुख्तारके नाम

खुला पत्र

माननीय मुख्तार साहेब, आपके समन्तभद्र स्मारककी योजना समाचार पत्रोंमें बराबर चार मासमें प्रकाशित हो रही है। योजना बहुत अच्छी है और तत्काल चालू कर देनेके योग्य है इसमें कोई सन्देह नहीं। मुझे पता नहीं कि आपकी प्रेरणाके फल स्वरूप बनारसके विद्वानोंने या वहांके विद्यालयसे निकले हुए व्यक्तियोंने अभी तक कितना सहयोग दिया है और कितना रुपया एकत्रित किया जा चुका है? यदि थोड़ी देरके लिए यह मान लिया जाय कि आपकी प्रेरणानुसार सवा दो लाख रुपयोंके वचन भी विद्वानोंने प्राप्त कर लिए हों और आपके पच्चीस हजार मिलाकर पूरे ढाई लाख भी हो गये हों, तथा आपके लिखे अनुसार साहूजीके भी इतने ही स्वीकृत हुए मानकर पांच लाख रुपये भी पूरे हुए मान लिए जायें, तो भी समन्तभद्र की स्मारक योजनाको कार्यरूपमें परिणत होनेके लिए कमसे कम पांच वर्षका समय अपेक्षित है।

मैं आपको और आपकी योजनाओंको तबसे जानता हूं जबसे कि आपने उनका समाचारपत्रोंमें प्रचार प्रारम्भ किया और फलस्वरूप दिल्लीके करौलबागमें समन्तभद्राश्रमकी स्थापना हुई, तथा उससे अनेकान्तका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। आप अपनी योजनाओंको मूर्त्तरूप देनेके लिए ३५ वर्षोंसे तो सक्रिय कदम उठा ही रहे हैं, जिसके फलस्वरूप वीर सेवा मन्दिरके भवन भी दो स्थानों पर बन गये, उनकी स्थायी आमदनीकी भी व्यवस्था हुई, नियमावली, उद्देश्य, ट्रस्ट, सोसायटी आदिकी सभी कानूनी कार्यवाहियां पूरी की गईं। मगर समाज जानना चाहता है कि आज उनसे क्या काम हो रहा है?

प्रारम्भमें तो समन्तभद्राश्रमसे और वीर सेवा मंदिर सरसावासे कुछ काम भी हुआ, मगर पीछेसे एकदम क्यों गतिरोध हो गया? क्या आप शुद्ध हृदयसे यह बतलायेंगे कि जिस व्यक्तिने आपको आपकी भावनाओं और योजनाओंको कार्यरूप परिणत करनेके लिए अपने तन, मन और धनसे सहयोग दिया, जिसने आपको अपना पिता, और गुरु एवं अपने आपको आपका पुत्र या शिष्य माना, जिसने दिल्लीमें वीर सेवा मन्दिरका एक विशाल भवन आपकी इच्छानुसार खड़ा कर दिया, उसके साथ आपके सम्बन्ध क्यों बिगड़ गये? और जिस नवीन भवनमें राजधानीके भीतर बैठकर आप अपने जिन कार्योंके सम्पन्न होनेके स्वप्न देख रहे थे, वे सब एक साथ एकदम क्यों विलीन हो गये?

समाज जानता है कि आपने अपने जीवनके प्रारंभमें मुख्तारगिरी की और आप कानूनोंके विशेषज्ञ हैं। किन्तु एक वकील जैसे अपने पक्षकारके पक्षको निर्बल जानते हुए भी उसे जितानेके लिए सभी संभव उपायोंका आश्रय लेता है, क्या स्वयं आपने भी उसी नीतिका आश्रय नहीं लिया? क्या सप्तम प्रतिमाधारी श्रावकके समान आप यह स्वीकार करेंगे कि मूलमें मूल तो आपकी ही थी सो उपादानके अनुरूप सहायक या निमित्तकारण भी आपको मिल गये और आपकी सारी योजनाओं पर पानी फिर गया। जिसके फल स्वरूप एक वीर सेवा मन्दिरके ट्रस्ट और सोसायटीके नाम वाले दो खंड हो गये और अब दोनोंका ही काम नाम मात्रको हो रहा है।

मैंने आपके पास रहते हुये रूबरू कई बार कहा कि आप व्यर्थके पचड़ोंमें न पड़कर रचनात्मक कार्योंमें योगदान दें। पर आप नहीं दे सके। अभी पिछले दिनों जब आपके 'भवाभिनन्दी मुनि' आदि नामसे ट्रेक्ट निकलना शुरू हुये और उनपर मेरी सम्मति आपने जाननी चाही, तब भी पत्र द्वारा मैंने आपको अपना भाव व्यक्त किया कि आप इन छोटे छोटे कार्योंको छोड़कर और वीरसेवा मन्दिरमें बैठकर अपनी चिरकालीन साहित्य-साधनामें लगें और अपनी आज तककी योजनाओंको मूर्तरूप देवें। आप अपनी समन्तभद्र स्मारक योजनामें जहां एकओर विद्वानोंसे सर्व प्रकारके सहयोग देनेका अनुरोध करते हैं, उसी लेखमें आप 'वेतनभोगी' पंडितों और किरायेके उपदेशकों आदि शब्दोंके द्वारा उन्हींका अपमान भी कर रहे हैं। आपकी इसी संकीर्ण दृष्टि अनुदार वृत्तिका ही यह फल है कि वीर सेवा मन्दिरसे आज तक जैसा कुछ काम होना चाहिए था, वह नहीं हो सका।

आपको काम करनेवाले विद्वानोंके साथ कैसा हो व्यवहार करना चाहिए या जैसा कि गांधीजी अपने वेतनभोगी भी सहयोगियोंके साथ करते थे, या पं० सुखलालजी जैसे विद्वान आज भी कर रहे हैं। उनकी विशाल दृष्टि और उदारवृत्तिका ही यह फल है कि गांधीजी अपने पीछे सैकड़ों अच्छे कार्यकर्ता छोड़ गये और पं० सुखलालजीने अपने अनेक शिष्यों एवं सहयोगियोंको बढ़ाकर अनेक उत्तम साहित्य सेवकोंकी परम्परा जारी कर दी है।

अब आपसे यही निवेदन है कि एक लम्बे समय तक आपके शिष्य, पुत्र या उत्तराधिकारी बने हुए वीर सेवा मंदिर सोसायटीके अध्यक्ष श्री बाबू छोटेलालजी कलकत्ता तथा ट्रस्टके मन्त्री और दत्तक पुत्र श्री पं० दरबारीलालजी कोठियाको शुद्ध हृदयसे एक मानकर उनका सहयोग प्राप्त करें और साथमें २-३ विद्वानोंको रखकर उनके साथ वेतन भोगियों जैसा नहीं, अपितु अपने पारिवारिकजनों जैसा मानकर उन कार्योंको मूर्तरूप देनेका प्रयास करें—जिन्हें कि आपने चिरकालसे संजोकर कृपणके समान अपने ताळोंमें बंदकर सुरक्षित रख छोड़ा है।

मेरे लिखनेका भाव यह है कि आप ट्रस्ट और सोसायटीके भेदभावको समाप्त कर दोनोंकी सम्मिलित आयसे वीर सेवा मंदिरके कार्यको प्रगति देवें और जो आपने ऐतिहासिक या अन्य प्रकारकी सामग्री एकत्रित कर रखी है, उसे अपने उक्त दोनों उत्तराधिकारियोंको सौंपकर एवं विद्वानोंको पूर्ण सहयोग देकर काम करावें। अब आप वीर सेवा मन्दिरके भाग्यविधाता या कर्ताधर्ता न बनकर मात्र एक तटस्थ सलाहकार एवं पथ-प्रदर्शक रहें और ट्रस्टकी सम्पत्ति और संचित सामग्रीका व्यामोह छोड़कर लोगोंको कार्य करनेका अवसर प्रदान करें।

मैं जानता हूं कि आज कल आप भवितव्यतावादीसे हो रहे हैं, किन्तु जैसे अभी तक पुरुषार्थवादी रहे और आज भी इस ८८ वर्षकी वृद्धावस्थामें अति जागरूक होकर कुछ न कुछ बौद्धिक कार्य १०-१२ घण्टे कर रहे हैं, समाज चाहता है कि आप अपने जीवनके शेष अमूल्य क्षणोंको अपने प्रारब्ध उन कार्योंके पूर्ण करनेमें लगावें। जिनकी कि पूर्तिकी आशा आपके पश्चात् अन्यसे नहीं की जा सकती है।

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि आप योजनाएं बहुत सुन्दर आदर्शवादी और समाज या धर्मके गौरवको बढ़ानेवाली बनाते हैं। पर उनकी सफलता या पूर्ण होनेकी आशा तभी की जा सकती है, जब कि आप अपने द्वारा संस्थापित संस्थाको ही संचालित कर उसे इस योग्य अपने जीवनकालमें बना जायें कि वही संस्था आपकी शेष योजनाओंको आगे क्रियान्वित करनेमें समर्थ हो।

मुझे आशा है कि आप मेरे सुझावके अनुसार उस पर तत्काल अमली कार्यवाही करेंगे, तो मुझे ही नहीं, सारे समाजको पूर्ण विश्वास है कि आपके भूतपूर्व और वर्तमान उत्तराधिकारी आपकी समन्तभद्र स्मारक योजनामें अपना सर्वस्व समर्पण कर देंगे और वही उन दोनोंके सर्वस्व त्यागका सच्चा उत्तराधिकारी स्मारक होगा। इस कटु सत्य खुला पत्रको लिखनेके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं। विनीत-

हीरालाल शास्त्री, ब्यावर।

बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके लिये, सम्पादक व प्रकाशक—मूलचन्द किसनदास कापड़िया, खपाटिया चकला-सूरत।
मुद्रक—मूलचन्द किसनदास कापड़िया व मुद्रणालय "जैन विजय" प्रिं० प्रेस खपाटिया चकला, गांधीचौक-सूरत।